''विष्णु प्रभाकर जी का नाटक'' युगे–युगे कांति'' वर्तमान संदर्भ में

प्रा.श्रीमती हेमलता पाटील माने
श्रीमती ए.आर.पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी.जि.कोल्हापूर.

विष्णु प्रभाकरजी का नाटय लेखन इतना प्रसिध्द है कि उसे आलोचको द्वारा स्वीकृति मिली है। उनके उन्य साहित्यिक पक्षपर दृष्टि नहीं जाती । वे नाटककार तथा एकाकीकार के रुप में बहुत मशहूर थे । उन्होंने नाटककार के रुप में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। वे मूलतः कहानीकार है। वे स्वयं अपने आपको कहानीकार मानते है। उन्हें कहानीकार के रुप में लोग भूल जाने का दुःख भी वे महसूस करते है।

साहित्यकार – ये बहुमुखी प्रतिभावाले साहित्यकार थे । इनकी प्रकृति सौम्य और सात्विक थी । उदात्त मानवीय मूल्यों के प्रति उनके मन मे अटूट अस्थायी । वे कुशल अभिनेता थे । उन्होंने एक मंडली की निर्मिती कि थी । कई मासिक पत्रिकाओं के सम्पादन में उन्होने सहयोग दिया । इन्होंने साठ से अधिक पुस्तकों का सम्पादन किया है। कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, रेखाचित्र, यात्रा–वृतांत, निबंध आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में उन्होंने ख्याति प्राप्त की थी । वे गांधीवादी विचारधारा के प्रवर्तक थे । इनकी वेशभूषा अत्यंत सीदी.साधी थी । उनका पेहेराव खादी था । साहित्यकार स्वभाव से ही प्रकृति प्रेमी थे । मानवेतर प्रकृति में ही उनका मन रम जाता था ।

देशप्रेमी – विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व में देशप्रेम कूट–कूट भरा हुआ था । देशपर प्राण–निछावर करनेवाले व्यक्तियों के प्रति वे श्रद्धा रखते थे । हिंसा के मार्ग पर चलनेवाले देशभक्त भी उनके लिए पूजनीय थे । देशपर प्राण निछावर करनेवाले व्यक्ति को महान मानते है।

नारी के प्रति सहानुभूति – भारतीय नारी के प्रति विशेष सहानुभूति थी । सामाजिक रुढीओं में जकडी नारी को बंधन से मुक्ति पाने का प्रयास इन्होंने किया । इनके रचनाओं के पात्र रुढियों और परंपराओं को दूर हटाने का प्रयास करते है। उनको विश्वास है कि ''एक समय आएगा, जब नारी सबल होकर आएगी । सबको समान स्तर पर आना पडेगा'' । ;डॉ.बी.एस.विवेकानन्दन पिल्ले – विष्णू प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना पृ.क्र.70द्ध उनका साहित्य नारी पर केन्द्रित था । नारी को सबल और सशक्त बनाने कार्य इन्होंने किया है। सकारात्मक विचारधारा के साथ थे । इन्होंने एक दर्जन से अधिक नाटकों की रचना की है। हिंदी नाटक को रंगमंच, रेडिओ और टेलिविजन पर लोकप्रिय बनाने में वे सफल हुए है।

नारी के प्रति होनवाले अन्याय के प्रति वे न्याय देना चाहते है। 'युगे–युगे क्रान्ति' में विधवा पर हुए अन्याय के प्रति उनका कहना है। पुरुष को एक से अधिक शादी करने का अधिकार है। वह एक स्त्री होते दूसरी स्त्री ला सफता है। लेकिन नारी भरी जवानी में बचपन में पति मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती । वह यह भी नही जानती कि जिंदगी किस चिडिया का नाम है। विवाह क्या होता है लेकिन ''समाज उसे विवाह करने का अधिकार नहीं देता । यौवन को बरबाद करने का अधिकार देता है। चोरी–चुपे पाप करने का अधिकार देता है। लेकिन दूसरी बार अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह करने का अधिकार नहीं देता । ;विष्णु प्रभाकर – युगे–युगे क्रांति, पृ.क्र.22द्ध विदेशी और विधर्मियोने हमारी इन्ही करीत्तियों का लाभ उठाया है। वे हमारी खिल्ली उडाते है। हम उनके सामने कमजोर निकले । वे ताकतवार हो गये । उनकी संख्या बढी है। हमारी घटी है। हमारी नारी घर छोडकर भाग जाने को मजबूर की जाती है। लेकिन हम अत्याचार नही होने देंगे । हमने निश्चय कर लिया है।

रामपूरवाली बेटी के हाथ पिले हो जाते है। पर बेटी पर विपती आ जाती है। लडकी साक्षत देवी का रुप है । जैसा रुप वैसाही स्वभाव है। बोलती है तो मोती झारते है। पर राम ने उस पर जुल्म कर दिया । हाथ की मेहंदी सूखने भी न पाई थी । और मांगका सिंदूर पूंछ गया । इस पर सभी लोगों की बहस होती है। सभी अफसोस हो जाते है। प्यारेलाल ने इसमें बदलाव लाने का प्रयास करता है। वह नयी क्रांती लाना चाहता है। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि लाला सुगनचन्द की विधवा बेटी कलावती से विसाह करेगा । इसे प्यारेलाल की मॉ का विरोध है तो भी वह अपने निर्णय से दूर हटता नहीं है। वह अपने हाथ–पॉव तोड लेने के लिए तैयार होता है। पर अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोडना चाहता परिवर्तन ही कामायबी है।

धार्मिकता और संस्कृति का बंधन – मानव जाति में अपना धर्म संस्कृत को महत्व दिया जाता है। इससे ही समाज में प्रतिष्ठा बढाई जाती है। समाज की प्रतिष्ठा ही घर को वरदान है। प्रदीप ने एक इसाई लडकी जैनेट के साथ शादी की थी । उसके पिताजी ने उसे शादी के लिए रोके नही । पिताजी ने प्रदीप से कहा कि समाज का ध्यान रखना चाहिए । इसलिए जैनेट को शुद्ध करके जान्हवी बना लिया जाए । लेकिन प्रदीप ने यह बात नहीं मानी । प्रदीप शादी करता है और शादी के बाद अपने दोस्त के पास रहता है। एक दिन अपनी पत्नी जैनेट के साथ माता–पिता को मिलने आता है पर उनकी माता–शारदा इन्हें घर में लेती नहीं । बिरादरी के विरुध्द शादी करने से माता–पिता नाराज होते है। अपनी संस्कृति और धर्म को वह भूल जाता है। उसे वह शुद्ध करने के लिए तैयार नहीं होता । मानव में परिवर्तन ही एक भाव यहॉ स्पष्ट रुप से उभरकर आता है।

रीति–रिवाजों को तोडना – अन्तरात्मा प्रदीप को याद दिलाती है कि प्रदीप की मॉ शारदा ने अपने माता–पिता के विरुद्ध विद्रोह किया था । शारदा के पिताजी ने भर बाजार में उसके गाल पर थप्पड मारा था कि उसकी सडी का पल्ला सिर से उतार गया साडी था । शारदा ने उसी दिन निश्चय किया था कि वह इन पुराने दकियानसी रिती–रीवाजों का पालन नही करेगी । देश की आजादी हो के लिए संघर्ष हो रहा था । वह स्त्रियों को इकठ्ठा करके पिकेटिंग करती है। पुलिस शारदा को पकडकर जेल ले जाते है। यह जानकर शारदा के पिताजी प्यारेलाल क्रुध्द होते है। प्यारेलाल कहते है कि ''शारदा ने घर की लाज नष्ट कर दी ।'' वे आगे कहते है कि ''क्रान्ति का यह अर्थ नहीं कि कुल समाज और धर्म की लाज घोलकर पी लिया जाए । ;विष्णू प्रभाकर – युगे–युगे क्रांन्ति, पृ.क.42द्ध प्रदीप को लडकी अन्विता ने अपने माता–पिता से पूछे बिना नेलसन के साथ शादी करने का निश्चय करती है। पर पिताजी का कहना है कि उसने दीपक को यूरोप से लौट आने के बाद शादी का निर्णय निश्चय जाय । पर अन्विता दीपक को अपने निर्णय की सूचना देती है। इसके बारेमें मॉ जैनेट अपने बेटे अनिरुध्द से कहती है कि अन्विता किसी स्वीड चित्रकार से शादी करना चाहती है। उसे रोकने से कहती है पर अनिरुध्द उसे कहता है। अ अन्विता की शादी कराने की जिम्मेदारी अब नहीं रही ।लडका–लडकी बडे बन जाने के बाद अपना निर्णय लेने की क्षमता बढती है। बडो का आद वे मानते ही नहीं है। नयी–पीडी में परिवर्तनही एक भाव यहॉ स्पष्ट नजर आ जाता है।

पीढी में परिवर्तन – प्रदीप का बेटा अनिरुध्द है। उसकी रिता नई संगिनी है। रिता की माता डच थी और पिताजी बंगाली ब्राम्हण थे । उसने अन्विता से नेलसन का परिचय करवाया था । रिता अनिरुध्द के घरच आती है। पिछले महीने अनिरुध्द श्यामला के साथ रहता था । उससे पहले सुमेधा के साथ रहता था। जब श्यामला ने विवाह करने की जिद की तब अनिरुध्द ने उसे छोड दिया । अनिरुध्द विवाह में विश्वास नहीं करता । उसका मत यह है कि प्रदीप सिध्दान्त के नाम पर दल बदलता है, वह प्रेम के नाम पर साथी बदलता है। प्रदिप को लगता है कि यह संघर्ष निरंतर होता आया है। अनिरुध्द और अन्विता में वे अपने को प्रतिबिम्बित देखते है। प्रदीप की अन्तरात्मा उससे कहती है कि उसने अपने माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध कोर्ट में जाकर शादी कि थी । इन दोनों के माता–पिता ने अपने–अपने समय में विद्रोह किया था । प्यारेलाल नया परिवर्तन करता है उसकी क्रान्ति एक अलग

धारा कि होती है। इन्होंने प्रतिज्ञा कि है । वह लाला सुमनचन्द की विधवा बेटी कलावती से विवाह करेगा । यह जानकर प्यारेलाल पिता–कल्याणसिंह उससे प्रतिज्ञा वापस लेने का आग्रह करते है। पिताजी–कल्याणसिंह ने प्यारेलाल को घर में आने को मना करते है। प्यारेलाल घर छोडकर चला जाता है। वह कलावती के साथ विवाह करता है।

प्यारेलाल के पिता कल्याणसिंह ने भी साहस किया था । उन दिनों आज की तरह पति, पत्नी के पास ''हम कुलीन लोग है। हमारी यही कुल–रीत है। बडे बुजुर्गो के रहते जवान लोक अपनी घरवाली का मुँह नही देखा करते । दिन में उनके पास नहीं आ सकता था । ;युगे–युगे क्रांति पृ.15द्ध कल्याणसिंह ने एक बार दिन में अपनी पत्नी का मुख देखा था । इस पर क्रुध्द होकर कल्याणसिंह के पिताजी लालाजी ने उसको खूब पीटा था। पिताजी सोचते है कि बेटे ने कुल की नाक काट डाली है। विष्णु प्रभाकर जी ने युगे–युगे क्रांति नाटक द्वारा परिवर्तन और परिवर्तनशीलता की होती हुई जडता के संघर्ष पर लिखा गया है। इसमें प्रचलित हो जाता है। समाज व्यवस्था, नियम, उपनियम को लांघकर कोई नया कदम उठाना चाहती है। इसमें उसकी व्यक्तिगत आशा–आकांक्षा छिपी रहती है। किसी न किसी रुप में सामाजिक जीवन पर चोट करती है। इसमें एक पीढी से लेकर पांचवी पीढी तक प्रचलित विधान में युवक एक नया कदम उठा लेता है लेकिन प्रौढावस्था तक आते–आते वह यह भी अनुभव करता है कि जो कदम उसने उठाया था उस की क्रांति कारिता बदले हुए संदर्भो में पुरानी पड गई है।

निष्कर्ष – पत्नी का मुँह देखना पहले एक क्रांतिकारी कदम था जिससे पिताजी कहते है कि कुल की नाक काट डाली है। धीरे–धीरे सम्बन्ध की इस भाव से विवाह संस्था के अस्वीकार तक पहुँच जाते है। उसके मन में बिना विवाह किये भी स्त्री–पुरुष का संबंध बना हर सकता है। इस नाटक में बदले हुए मूल्यों का चित्रण हुआ है। विष्णु प्रभाकरजी की नाटक लिखने की खासीयत है किवे अंत नाटकीय संघर्ष का अभाव रहता है। वे बहुत बडे नाटकीय मोड पर नाटक का अंत नहीं करते ।नाटक में अन्विता की स्वेच्छा पर अन्तरजातीय विवाह की सूचना पाकर मॉ–बाप के दिल के लगनेवाली चोट को प्रदर्शित होती है। भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होता हुआ नजर आता है। भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होता हुआ नजर आता है। लडकियॉ अपनी पसन्द के वर के साथ स्वेच्छा से शादी की बात पक्की कर लेते है। इसका पता माता–पिता को शादी के पहले ही कुछ दिन तक ही मिलता है। पश्चिम का अन्धानुकरण करते हुए विवाह सूत्र में बॅधे बिना ही एक ही साथ रहने लगते है। नाटक के दृश्यों द्वारा इस बात का धीरे–धीरे अनावरण होता है। कि हर पीढी में विवाह सम्बन्धी मूल्यों में कोई न कोई परिवर्तन आता रहा है। विवाह संस्था के क्षेत्र में हर पीढी में किस प्रकार के मूल्य–परिवर्तन आ जाते है। इसका फलस्वरुप अगली पीढी का किस प्रकार का मानसिक संघर्ष और पिछली पीढी शारीरिक संघर्ष होता है। युग–युग में होनेवाली यह क्रांति सहज और स्वाभाविक शाश्वत होती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ.बी.एस.विवेकानन्दन पिल्ले, विष्णु प्रभाकर के नाटय साहित्य में सामाजिक चेतना, जवाहर प्रकाशन, 2007
2. डॉ. महीपसिंह – विष्णु प्रभाकर व्यक्ति और साहित्य प्रकाशक – अभिव्यंजना संस्करण, 1983
3. विष्णु प्रभाकर – युगे–युगे क्रांति – राजपाल एण्डसन्ज कश्मीरी गेट, दिल्ली संस्करण, 1988
4. अपर्णा पालीवाल – विष्णु प्रभाकर का निबंधक साहित्य